शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अनिवार्य शिक्षाएँ

उद्धार को समझना

अध्याय 1 : मैं अपने उद्धार के बारे में कैसे सुनिश्चित हो सकता हूँ?

बाइबल स्पष्ट करती है कि जो कोई परमेश्वर में विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। यह बात बिल्कुल सरल है। यह अध्याय आपके बहुत से भय व अनिश्चितताओं को दूर करके उद्धार के विषय में आपको सहायता प्रदान करेगा।

कई बार नये विश्वासियों के लिये यह समझना काफी मुश्किल होता है कि वे बिना किसी कार्य या बलि के द्वारा उद्धार पा चुके हैं। यह अध्याय वचन की सहायता से उन्हें समझाने में आपको योग्य बनाएगा।

उद्धार का निश्चय मनोभावों और भले कार्यों पर आधारित नहीं हो सकता। उसे किसी मज़बूत आधार पर आधारित होने की आवश्यकता है – अर्थात् परमेश्वर के वचनों व पवित्र आत्मा प्राप्त करने के बाद हमारे जीवन में प्रगट होने वाले परिवर्तन पर। यह अध्याय आपकी यह जानने में सहायता करेगा, कि आप किस तरह से जान सकते हैं कि आप एक मसीही हैं।

चिन्तन करें

जब तक आप प्रभु का इनकार या उसके लिये जीवन व्यतीत करना बन्द न कर दें; तब तक निश्चय ही उद्धार पर आपका अधिकार है। शैतान आपको किसी झूठ के द्वारा बहकाने न पाए।

क्या यूहन्ना 10:27–28 में कहे गए वचन हमारे उद्धार की पुष्टि नहीं करते ? यह अनुच्छेद कहता है कि "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे–पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ और वे कभी नाश नहीं होंगी; और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

मिरियम को सोने में बहुत दिक्कत हो रही थी। उसने सोने से पहले बाइबल में यूहन्ना 3:36 पढ़ा था, जहाँ लिखा था कि "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र को नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा; परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है। इस वचन को पढ़कर वह बहुत परेशान हो गयी, क्योंकि उसने केवल कुछ ही दिन पहले यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया था और उसने यूहन्ना की पुस्तक को पढ़ना प्रारम्भ ही किया था। वह मन से परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहती थी, लेकिन उसे इस बात का अन्दाज़ा नहीं था कि उसने उद्धार पाने के लिये पर्याप्त कार्य कर लिये हैं। मिरियम का मानना था कि परमेश्वर सर्व–शक्तिमान है और उसे यह बात असहनीय प्रतीत होती थी कि परमेश्वर उस पर क्रोधित होंगे। इस जीवन के उपरान्त होने वाली घटनाओं के बारे में सोचते–सोचते उसने यीशु के बारे में खोजना शुरू कर दिया। मिरियम सोचती थी – कि क्या वह कभी निश्चय जान पाएगी कि उसके पाप क्षमा हो गए हैं और वह अन्त में बच जाएगी?

हम सभी अपने जीवन में सन्देह करते हैं। कई बार हम सोचते हैं कि वास्तव में हमारा विश्वास मज़बूत है या परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं सच्ची हैं। यह समय परमेश्वर के और अधिक समीपता में आने का, अपने लिये उसके वचन की प्रतिज्ञाओं को पढ़कर सुनिश्चित होने का होता है। परमेश्वर ने हमें हमारे हाल पर अकेला नहीं छोड़ा है; और न ही उसने हमें सोचने के लिये मझधार में छोड़ा कि हम उसे कैसे प्रसन्न करें। परमेश्वर ने हमें सुनिश्चित कराने के लिये दो उपाय दिये हैं।

प्रथम, परमेश्वर के वचन में हमें भरोसा दिलाने के लिये प्रतिज्ञाएँ पायी जाती हैं। संसारभर में बाइबल के समान कोई दूसरी पुस्तक नहीं है। यह परमेश्वर के द्वारा प्रेरित, व उद्धार तथा मसीही जीवन का आधार है। यह पुस्तक 1500 वर्षों के अन्तराल में 40 विभिन्न लेखकों के द्वारा लिखी गयी – फिर भी इसकी विषय–वस्तु आपस में एक दूसरे से जुड़ी हुई व सम्पन्न है। दूसरा, कौन से कार्य इन दावों को कर सकते हैं?

दूसरी बात, उद्धार मौलिक रूप से हमारे जीवन को परिवर्तित कर देता है। कई बार हम अपने आप को यह कहते हुए धोखा देते हैं कि इस प्रकार के काम करने की वजह से ही मेरे जीवन में यह परिवर्तन आया है। लेकिन सच में उद्धार पाया हुआ व्यक्ति अपने आप को केवल नामधारी मसीही दिखाने की बजाय गहराई से परिवर्तन को प्रगट करने की कोशिश करेगा।

एक अनिंद्रापूर्ण रात के बाद, मिरियम अपनी दोस्त लीना से मिलने गई, जिसने उसे सुसमाचार सुनाया था। उसने लीना से पूछा कि वह कैसे कह सकती है कि वह उद्धार पा चुकी है; क्योंकि उस समय उसे अपने भीतर उद्धार पाने की अनुभूति महसूस नहीं हो रही थी। लीना ने उसे अपने गले लगाते हुए दिलासा दिया और कहा कि भावनाओं या अनुभूतियों के आधार पर परमेश्वर द्वारा प्राप्त उद्धार के वरदान का मूल्यांकन करना सही नहीं है। अनुभूतियां आती–जाती रहती हैं। हम यह सोचते हुए अपने कामों पर भी भरोसा नहीं कर सकते कि परमेश्वर हमारे कामों को देखकर हमें उद्धार का वरदान देंगे। परमेश्वर के वरदान इस प्रकार से कार्य नहीं करते। मिरियम अभी भी समझ नहीं पा रही थी कि लीना कैसे जानती है कि उसे उद्धार मिल चुका है। लीना ने अपनी बाइबल उठाई और मिरियम से ढेरों प्रश्न पूछने लगी।

पहला, लीना ने मिरियम से पूछा कि क्या उसने स्वीकार किया था कि उसने पाप किये हैं ? मिरियम ने कहा कि उसने स्वीकार किया है; वह अपने पापों से दुःखी थी और उसे आवश्यकता थी कि यीशु मसीह उसके पापों को क्षमा करें। लीना ने मिरियम से पूछा कि क्या वह विश्वास करती है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र व प्रभु है? मिरियम ने कहा, निःसन्देह! तब दोनों ने मिलकर बाइबल से रोमियों 10:9 को पढ़ा, जहां लिखा है, "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" इसके अलावा उन्होंने यूहन्ना की पुस्तक से भी एक वचन को पढ़ा, जिसे मिरियम भी पढ़ रही थी। यूहन्ना 5:24 में लिखा है कि "मैं तुमसे सच–सच कहता हूं कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" मिरियम को इन वचनों को पढ़कर आराम मिला, क्योंकि वह जानती थी कि उसने अपने जीवन में ऐसा किया था। लीना मिरियम के लिये चाय ले आयी, और जब उन्होंने बाइबल के कुछ और वचनों को देखा व उन पर चर्चा की तो मिरियम ने महसूस किया कि उद्धार सम्बन्धित वचनों को पढ़ने से उसके भीतर विश्वास बढ़ रहा है।

लीना मिरियम को लम्बे समय से जानती थी, और उसने बताया कि मिरियम के जीवन में बहुत गहन बदलाव था। विरोधी आत्मा के बदले, वह परमेश्वर की इच्छा को जानने व उसका पालन करने का प्रयास करने लगी थी। वह परमेश्वर के लोगों के लिये प्रेम प्रदर्शित करने लगी थी तथा वह अपने जीवन में उन सारी बातों को त्यागने के लिये तैयार थी, जो परमेश्वर को पसन्द नहीं थीं। लीना ने उसे 1 यूहन्ना अध्याय 5 दिखाया, जिससे हमें बहुत सी सच्चाईयां प्राप्त होती हैं तथा हम जान सकते हैं कि हम उद्धार पा चुके हैं। इन बातों को पढ़कर वह याद करने लगी कि वह किस तरह परमेश्वर के वचनों को समझने लगी थी; जबकि कई बार उसे इन बातों का कोई औचित्य नज़र नहीं आता था, लेंकिन धीरे–धीरे वह परमेश्वर की बातों का आज्ञापालन करने लगी। मिरियम को अब यकीन हो गया था कि उसे परमेश्वर के क्रोध का सामना नहीं करना पड़ेगा और निश्चय ही उसके पाप क्षमा हो गए हैं। उसकी मित्र के साथ बाइबल से बातचीत करने के

"कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।"

रोमियों 10:9

द्वारा उसे बहुत आराम मिला और साथ ही साथ उसे उद्धार का निश्चय प्राप्त हो गया।

यदि किसी को अपने उद्धार के बारे में सन्देह है, तो हम भी उससे ये प्रश्न पूछ सकते हैं : क्या बाइबल में प्राप्त ये वचन आपके जीवन में प्रगट होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करते हैं? क्या आपने उन मांगों को पूरा किया, जो परमेश्वर का वचन आपसे कर रहा था (अर्थात्: पश्चाताप, पापों का अंगीकार, और विश्वास करना)? क्या आपको नया जीवन, नया हृदय, नया मन और पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ? यदि वे लोग अपने जीवन में इन बातों के प्रमाणों को प्रगट होते हुए नहीं देखते हैं, तो यह आपके लिये सुसमाचार सुनाने का अति उत्तम अवसर होगा। यदि आप सोच रहे हैं कि आपका उद्धार सुनिश्चित हुआ है या नहीं; तो आपको किसी चिन्ह या चमत्कार की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर के वचन ही हमारे लिये एक चिन्ह हैं; और पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा हृदय परिवर्तन ही सबसे बड़ा चमत्कार है।

हम परमेश्वर के वचनों और हमारे जीवन में उसके द्वारा किये गये कार्यों पर भरोसा कर सकते हैं; और भरोसा करते हैं, जब हम आज्ञाकारिता के द्वारा उसके नजदीक आते हैं, तो वह भी हमें मज़बूती से थामे रहता है। यूहन्ना 10:28 में लिखा है, "और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं; और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।" परमेश्वर उद्धार के कारण हमारी और हमसे जुड़ी सारी बातों की सुरक्षा करते हैं। यहूदा 1:24–25 कहता है, "अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है। उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।।"

सुर्खियाँ

- अनुभूतियाँ उद्धार का सटीक प्रमाण नहीं हैं। हमारी भावनाएँ कई बार हमें पदभ्रष्ट कर सकती हैं, परन्तु परमेश्वर का वचन नहीं।
- हमारे उद्धार का स्रोत परमेश्वर का वचन है और उसका परिणाम हमार परिवर्तित जीवन।
- परमेश्वर का वचन बताता है कि हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिये और विश्वास करना चाहिये कि मसीह यीशु परमेश्वर का पुत्र है और परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित कर दिया है, और अंगीकार करना चाहिये कि वह ही प्रभु है।

- इसका परिणाम आज्ञाकारिता, प्रेम व हमारे साथ पवित्र आत्मा की उपस्थिति होगा। जैसे–जैसे हम यीशु के समान बनते चले जाते हैं, हमारा जीवन भी परिवर्तित होता जाएगा।

अब आप बताएँ

- जब आपके मन में उद्धार के सम्बन्ध में कुछ सन्देह उत्पन्न होता है, तब आप क्या कर सकते हैं?

- आप परमेश्वर के वचन की सहायता से किस प्रकार नये विश्वासी को उद्धार के मुफ्त वरदान के सम्बन्ध में सुनिश्चित कर सकते हैं?

- प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने के बाद से आपके जीवन में क्या परिवर्तन हुए हैं?

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी औफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing